[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3256

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

वर्तमान पर्यावरणीय समस्याएं एवं सुझाव

सुधा शाक्य
सहायक प्राध्यापक मनोविज्ञान, शास. स्ना. महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.)

संक्षेपिका
आज पर्यावरण से ही हर व्यक्ति जीवजंतु एंव वनस्पतियों को जीवन मिल रहा है, परंतु पर्यावरण की स्थिति ऐसी हो गई है कि जिसे संभालना बहुत मुश्किल हो गया है। प्रस्तुत शोध आलेख वर्तमान में पर्यावरण की कौन–कौन सी समस्याएं हैं और उसका निराकरण एवं समाधान कैसे किया जाये के उद्देश्य से प्रस्तुत है। आज पर्यावरणीय समस्याओं में जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण, वैश्विक ताप, समुद्र प्रदूषण, ओजान परत का क्षतिग्रस्त होना, अपशिष्ट विघटन, जैव विविधता में कमी आदि समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, जिसका समाधान एवं निराकरण अति आवश्यक हो गया है।

कुंजी शब्द–पर्यावरण, समस्या, सुझाव।

प्रस्तावना

भारत में प्राचीन काल से ही प्रकृति एवं पर्यावरण का अटूट संबंध रहा है, और धार्मिक ग्रंथों में प्रकृति को जो स्थान प्राप्त है वह अतुलनीय है। प्रकृति की सुरक्षा के लिये हमारी संस्कृति में अनेक प्रयास किये गये, सामान्य जन को प्रकृति से जोड़े रखने के लिये उसकी रक्षा, पूजन, विधान, संस्कार आदि को धर्म से जोड़ा गया। गौ एवं अन्य जानवरों का पूजन वंश रक्षा के लिये तथा विभिन्न नदियों, पेड़ों, पर्वतों का पूजन उसकी सुरक्षा और अस्तित्व को बनाने के लिये अति आवश्यक हो गया था। परंतु जैसे समय व्यतीत होता गया व्यक्तियों की विचारधारा, सोच, अभिवृत्ति, आस्था, भावों में परिवर्तन होता गया और व्यक्ति धीरे–धीरे स्वार्थी होता चला गया। प्रकृति को दोहन एवं क्षरण करता चला गया जिसका परिणाम आज हमारे सामने है। हमारा परिवेश जिसमे व्यक्ति, पेड़–पौधे एवं जीव–जंतु निवास करते हैं, पर्यावरण तो कहलाता है परंतु आज जो स्थिति उसकी है वह बहुत चिंतनीय एवं व्यथित करने वाली है। जिस पर्यावरण में रहकर व्यक्ति अपना स्वास्थ्य संवर्धन करता था वही आज उसके लिये अभिशाप हो गया है। जिसके जिम्मेदार भी हम ही हैं। हमने स्वार्थवश स्वयं का विकास एवं प्रगति करने के लिये पर्यावरण के साथ खिलवाड़ किया है और उसके प्रदूषित किया है। जिसका दुष्प्रभाव आज व्यक्ति के जीवन में विभिन्न गंभीर बीमारियो, प्राकृतिक आपदा, जलवायु, परिवर्तन आदि के रुप में परिलक्षित हो रहा है। चाणक्य ने पर्यावरण की महत्व को स्पष्ट करते हुये कहा है कि किसी भी राज्य की स्थिरता पर्यावरण की स्वच्छता पर निर्भर करती है। चरक संहिता में भी स्पष्ट उल्लेख है कि स्वास्थ्य जीवन के लिये शुद्ध वायु, जल और मिट्टी आवश्यक कारक हैं। पर्यावरणीय असंतुलन के कारण आज देश की गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, गंभीर शारीरिक रोग जैसे एड्स, कैंसर बगैरह उत्पन्न हो रहे हैं। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (एम.एस.एस.ओ.) के सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2011–12 में देश में गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या 26 करोड़ 94 लाख थी इसी प्रकार केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय नई दिल्ली (2015) की रिपोर्ट के अनुसार एच आई बी/एड्स पीड़ितों की संख्या महाराष्ट्र में 1 लाख 59 हजार 25 रोगी हैं और यह राज्य देश में एड्स रोगियों की कुल संख्या के आधार पर प्रथम स्थान पर है। इसके बाद दूसरा स्थान आंध्रप्रदेश का है जहां 1 लाख 31 हजार 892 एड्स रोगी हैं। यह एक चिंतनीय विषय है। यदि पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण नहीं किया गया तो भविष्य में और कई नई समस्याएं जन्म

ले सकती हैं। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक का यह नैतिक कर्तव्य है कि पर्यावरण को सुरक्षित तथा संरक्षित कर नैतिकता का परिचय दें।

वर्तमान पर्यावरणीय समस्याएं

जनसंख्या वृद्धि– आज देश की जनसंख्या 121 करोड़ से भी अधिक हो गई है। प्राप्त संसाधनों की कमी से उत्पन्न समस्याओं जैसे भोजन, पानी, ईधन की कमी तथा सामाजिक समस्याओं जैसे अपराध, भुखमरी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य समस्याओं आदि का बढ़ना। परिवार कल्याण मंत्रालय की 1992 की रिपोर्ट से यह बात सामने आई कि 2025 तक भारत, चीन को पीछे छोड़कर संसार का सबसे जनसंख्या वाला राष्ट्र बन जाएगा।

प्रदूषण

जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रदूषण की समस्या भी बढ़ गई है। वायु, जल, मृदा आदि के प्रदूषित होने के कारण जन सामान्य, जीव–जंतु एवं वनस्पति पर इसका प्रतिकूल प्रभाव हो रहा है। कई प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक समस्या जन्म ले रही हैं एवं अनुमान के आधार पर व्यक्ति अपने आहार–विहार के साथ लगभग . 24 मिलीग्राम विषैले तत्व रोज ग्रहण करता है। मृदा की भी उपजाऊ क्षमता क्षीर्ण हो रही है।

वैश्विक ताप वृद्धि– इसके कारण पृथ्वी और समुद्र के तापक्रम में वृद्धि हो रही हे। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। ब्रिटेन के अर्थशास्त्री निकोलस स्टर्न की रिपोर्ट के अनुसार सन् 2100 तक धरती के तापमान में 10 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक वृद्धि संभावित है। जिससे मौसम परिवर्तन के खतरे के साथ 30 प्रतिशत जमीन सूखा ग्रस्त हो जाएगी। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार गंगोत्री ग्लेशियर अगले 20 से 30 सालों में समाप्त हो जाएगी। हरित ग्रह प्रभाव के संकट के कारण वायुमण्डल में ऊष्मा गैसों की वृद्धि हुई है। अम्लीय वर्षा की अधिकता हो रही है।

अपशिष्ट विघटन – यह एक गंभीर समस्या है क्योंकि प्लास्टिक, कचरा, नाभिकीय अपशिष्ट आदि का नष्ट न हो पाना कई प्रकार की समस्याएं जैसे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्या, पर्यावरण आदि संबंधित समस्याओं को जन्म दे रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों की दोहन – आज व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग निर्दयता से कर रहा है जिसके परिणामस्वरुप जलस्तर में कमी, मृदा में विषैलेतत्वों की बढ़ोत्तरी, वायु एवं जल प्रदूषण जैसे समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार 2080 तक 3 अरब 20 करोड़ लोगों को पीने का पानी नहीं मिलेगा और महामारियों की वृद्धि के साथ उनसे निपटने के साधन कम होंगे।

जैव विविधता की कमी – स्वयं के निवास हेतु जंगलों और वृक्षों की कटाई, पशुवध, पशुपालन में कमी आदि अमानवीय कृत्यों के कारण परिस्थितकीय तंत्र में असंतुलन उत्पन्न हो गया है जिसका सीधा प्रभाव जीव जंतु और वनस्पति पर हुआ है, और पूर्व में पायी जाने वाली प्रजातियां धीरे–धीरे या तो विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं। संकटग्रस्त प्रजातियों में काला हिरण, मगरमच्छ, भारतीय जंगली गधा आदि हैं। विलुप्त प्रजातियों में एशियाई चीता, गुलाबी सिरवाली बतख शामिल है, पक्षियों की संख्या के गिरावट एवं विस्थापन गंभीर समस्या बन गई है।

समुद्र प्रदूषण – आज आण्विक अस्त्रों का समुद्र में परीक्षण, औद्योगीकरण, जहरीले अपशिष्ट, औद्योगिक अपशिष्ट, कचरा महासागरों को प्रदूषित कर रहा है। जिससे उसमें रहने वाली मछलियां, जीव–जंतु, वनस्पतियां रोग ग्रस्त हो रही हैं। जिसका उपयोग यदि मनुष्य करते हैं तो उनमें भी विभिन्न रोग स्थानांतरित हो जाते हैं। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार समुद्र में गिरने वाले पानी में सर्वाधिक

विषैले कारक पारे का सांद्रण हो रहा है। जिसका असर मछलियों तथा जीवों पर पड़ रहा है। हिंद महासागर में पायी जाने वाली शार्क मछलियों में सर्वाधिक पारे की मात्रा मिली।

ओजोन परत का क्षतिग्रस्त होना – वायु मंडल में पायी जाने वाली ओजोन परत सूर्य की पराबैंगनी किरणों से रक्षा करती है। परंतु विषैली गैसें क्लोरीन एवं ब्रोमाइड के कारण उसमें छिद्र उत्पन्न हो गये हैं। और सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी पर आ रही हैं जिससे कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक विकार, पेड़–पौधों और जीव–जंतुओं में व्याधियां उत्पन्न हो रही हैं।

सुझाव

- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं विकास किया जाये।
- वनों और जंगलों का विकास वृक्षारोपण करके किया जाये और वन प्रबंधन को बढ़ावा दिया जाये।
- वन्य प्राणी संरक्षण हेतु स्थानीय एवं राज्य स्तरीय प्रयास किये जाएं।
- अपशिष्ट पदार्थो के पुनर्चक्रण एवं पुर्नउपयोग पर बल देकर अपशिष्ट पदार्थ प्रबंधन किया जाये।
- विद्यालय एवं महाविद्यालयों में ''पर्यावरण अध्ययन'' एक अनिवार्य विषय के रुप में पढ़ाया जाये।
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम तथा अन्य अधिनियमों का कड़ाई से पालन किया जाये।
- वाहनों को प्रदूषण मुक्त कर सौर ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा का उपयोग यथा संभव किया जाये।
- पशु पालन को प्रोत्साहन एवं जैविक खाद का उपयोग कृषि हेतु किया जाये।
- व्यक्तियों में धर्म, आध्यात्मिक एवं वैदिक कार्यो के प्रति सकारात्मक सोच एवंरुचि जाग्रित की जाये।

निष्कर्ष

आज पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की गंभीर समस्याएं जन्म ले रही हैं। जिसमे योगदान व्यक्तियों का ही है। यदि समय रहते इसका निराकरण नहीं किया गया तो जीव–जंतुओं, वनस्पतियों एवं मानव के अस्तित्व पर विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा। पर्यावरण को शुद्ध, स्वच्छ एवं संरक्षित रखने की नैतिक जिम्मेदारी हमारी ही है।

संदर्भ

1. *दैनिक भास्कर समाचार पत्र (25 जुलाई एवं 2 अगस्त 2015) जबलपुर (म.प्र.)*
2. *जैन, एम.(2013), पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका, रचना, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ एकादमी भोपाल ं पृ.क्र. 45*
3. *श्रीवास्तव, आर. (2004), आधुनिक पर्यावरण समस्याओं का वैदिक समाधान, रिसर्च लिंक जर्नल 14*
4. *(III.4) पृ.क्र. 87*
5. *तिवारी, ए.(2014) जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण सुरक्षा, कृष्ण कम्प्यूटर्स एंड प्रिंटर्स सागर, पृ.क्र. 237–38*
6. *राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी पत्रिका (2015) स्वामी विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय लखनादौन पृ.क्र. 67*